

ग्रामीण विद्यार्थियों की विद्यालयेत्तर अधिगम पारिस्थितिकी

रवनीत कौर*

इस शोध पत्र में ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की विद्यालयेत्तर अधिगम पारिस्थितिकी¹ (इकोलॉजी) पर आधारित शोध अध्ययन के परिणामों एवं विशेषताओं को प्रस्तुत किया गया है। यह शोध पत्र इस आधारभूत सैद्धांतिक मान्यता पर आधारित है कि विद्यार्थी अपने परिवेश के सक्रिय अभिकर्ता के रूप में दैनिक जीवन से जुड़े कार्यों में सहभागिता करते हैं। यह सहभागिता केवल प्रतीकात्मक एवं यांत्रिक नहीं होती है, बल्कि उनकी अधिगम पारिस्थितिकी का निर्माण करती है। इस अधिगम पारिस्थितिकी में संबंधों के गहन जाल, गतिविधि क्षेत्रों की बहुलता और वयस्कों के साथ अंतर्क्रिया की प्रक्रिया एवं संरचना तथा ज्ञान के निर्माण का अवसर मिलता है। शोध अध्ययन के सहभागी या न्यादर्श विद्यार्थियों के दैनिक जीवन से जुड़े अनुभवों को वृत्त अध्ययन (केस स्टडी) के आधार पर संकलित किया गया था। यह शोध पत्र शोध के सहभागी विद्यार्थियों के वृत्त अध्ययनों (केस स्टडी) के गुणात्मक विश्लेषण के अंतर्गत विद्यालयेत्तर अधिगम पारिस्थितिकी के प्रमुख पाँच आयामों, जैसे— घरेलू कार्यों में सहयोग, खेती और पशुपालन, व्यावसायिक गतिविधियों में भागीदारी, मित्रों के साथ जुड़ाव तथा जनसंचार के माध्यम, के आधार पर तथ्यों का विश्लेषण कर परिणामों को प्रस्तुत करता है। जो 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' की अनुशंसा विद्यालयी शिक्षा में विद्यार्थियों को स्थानीय कला और शिल्प की शिक्षा देने तथा स्थानीय समुदाय से विशेषज्ञों को आमंत्रित करने को मजबूत आधार प्रदान करने में सहायक होगा।

शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए सीखने को आनुभविक, गतिविधि केंद्रित एवं विचार-विमर्श पर आधारित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया बनाने का सुझाव दिया जाता है। इस सुझाव के अनुसार हमारी शिक्षा की अधिगम संस्कृति बदले इसके लिए पहली आवश्यक शर्त यह है कि हम अपने विद्यार्थियों के

संदर्भ, उनके दैनिक जीवन की गतिविधियों, इसमें उनकी भूमिका और इसके निहितार्थ पर विचार करें। हम उन गतिविधियों के बारे में जानें, जो वे अपने दैनिक जीवन में करते हैं, जिनमें सामान्यतः बिना औपचारिक शिक्षा से जुड़ी बच्चों² और वयस्कों की अंतर्क्रियाएँ होती हैं। इन अंतर्क्रियाओं के आधार

*असिस्टेंट प्रोफेसर, माता सुंदरी महिला कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110002

¹यह कार्य भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई.सी.एस.एस.आर.) और मानव संसाधन विकास मंत्रालय की इम्प्रेस योजना के द्वारा वित्तपोषित है।

²इस कार्य में बच्चा या बच्चे और बच्चों शब्दों को विद्यार्थी अथवा विद्यार्थियों के समानार्थी के रूप में उपयोग किया गया है।

पर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को आनुभविक बनाने वाली गतिविधियों से समृद्ध करें।

इस संदर्भ में कोर्पेस एवं अन्य (2016) का मत उल्लेखनीय है। वे दैनिक जीवन की गतिविधियों में बच्चों की सहभागिता के संदर्भ में दो मॉडलों का उल्लेख करते हैं। पहले मॉडल में दैनिक जीवन की गतिविधियों में सहभागिता को बच्चों के लिए बाधक माना जाता है। बच्चे विद्यालय के कार्यों से अधिक से अधिक सीखें, इसके लिए उन्हें घर एवं परिवार के दायित्वों से मुक्त रखा जाता है। यह मॉडल मध्यमवर्गीय नगरीय परिवारों में देखा जा सकता है, जहाँ बच्चे विद्यालय के बाद की शैक्षिक गतिविधियों में जुड़े रहते हैं, जिसमें वे लगातार किसी न किसी वयस्क की निगरानी में होते हैं। दूसरे मॉडल में बच्चे, परिवार और घर की गतिविधियों में सक्रिय सहभागी होते हैं। वे 'अच्छे आचरण' के लिए उद्देश्यपरक अधिगम गतिविधियों में भाग नहीं लेते, बल्कि घर के काम करने, बरतन साफ़ करने, खेतों में काम करने या अन्य सामुदायिक गतिविधियों में सहभागिता आदि उनके जीवन का स्वाभाविक हिस्सा होती है। यह मॉडल ग्रामीण परिवेश के वंचित वर्ग से जुड़े परिवारों में सर्वाधिक देखा जा सकता है (बालगोपालन, 2008; वसंता, 2004)। नगरीय क्षेत्रों में प्रवासी और वंचित परिवारों के संदर्भ में भी इसके उदाहरण मिलते हैं (मिश्रा, 2017)। इसके अलावा, मानवशास्त्रीय शोध अध्ययन विद्यालय के भीतर और बाहर की गतिविधियों में बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में अंतर को भी बताते हैं।

स्क्रिबनर और कोल (1973) के अनुसार विद्यालय के भीतर सीखने की गतिविधियाँ मुख्यतः भाषा के माध्यम से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का

द्योतक हैं, जबकि विद्यालय के बाहर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया प्रदर्शन, अनुकरण और गैर-भाषाई माध्यमों से होती है। ये बताते हैं कि विद्यालय के भीतर सीखने की प्रक्रिया संज्ञान पर आधारित होती है, जबकि विद्यालय के बाहर सीखने की प्रक्रिया में अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक-सांवेगिक आयाम भी सम्मिलित होते हैं। ग्रीनफील्ड और लावे (1982) का मानना है कि विद्यालय के बाहर सीखना पूर्व निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप आयोजित नहीं होता बल्कि यह कार्य की स्वाभाविक स्थिति में प्रत्येक सदस्य की सहभागिता से उत्पन्न होता है, जिसमें प्रत्येक सदस्य उस कार्य में योगदान करने के लिए अभिप्रेरित होता है।

रोगोफ (1993) का मानना है कि विद्यालय के बाहर सीखने की प्रक्रिया के केंद्र में दैनिक जीवन के कार्यों का निष्पादन और आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, जिसके लिए परिवार के सभी सदस्य मिलकर कार्य करते हैं। इनमें वयस्क और बच्चों की अलग संरचनात्मक श्रेणियाँ नहीं होती हैं। इस तरह के सीखने वालों के समुदाय में बच्चे घर के कार्य में योगदान करने की भावना से प्रेरित होते हैं, उन्हें किसी अन्य बाह्य पुरस्कार की इच्छा नहीं होती। उनकी संतुष्टि का आधार यह होता है कि वे परिवार के एक महत्वपूर्ण सदस्य के रूप में कार्य के निष्पादन में योगदान कर रहे हैं। इस तरह के अधिगम संगठन में लचीलापन होता है अर्थात् दायित्वों का वितरण एवं श्रम का विभाजन सुविधानुसार किया जाता है। यदि सीखने के सामाजिक-सांस्कृतिक उपागम (लेव और वेंजर, 1991) की दृष्टि से देखें तो कोई भी विद्यार्थी अपने सांस्कृतिक संदर्भ का कर्ता होता है और उसके विकास की प्रक्रिया को इस संदर्भ के सापेक्ष समझा जाना चाहिए। सांस्कृतिक संदर्भों के प्रभाव

के कारण अनुभवों की बहुलता होती है। यह कक्षा की संस्कृति और कक्षा में पढ़ाई जाने वाली सामग्री के अनुरूप हो, यह आवश्यक नहीं है। बच्चे अपने परिवेश से अर्जित प्रतीकों एवं भाषा के माध्यम से भौतिक घटकों, सामाजिक संबंधों और प्रक्रियाओं की व्याख्या करते हैं।

इस सैद्धांतिक पृष्ठभूमि के आलोक में, इस शोध अध्ययन का उद्देश्य गाँवों में रहने वाले बच्चों की अधिगम पारिस्थितिकी की पहचान करना एवं उपयुक्त तथ्य संकलित कर व्याख्या करना था। इस शोध अध्ययन में अधिगम पारिस्थितिकी की अवधारणा इस आधारभूत मान्यता पर आधारित है कि व्यक्ति और उसके परिवेश में गहन पारस्परिक संबंध होता है। सीखने की प्रक्रिया परिवेश के विभिन्न मानवीय सामाजिक-सांस्कृतिक या सांवेगिक आयामों एवं भौतिक घटकों के साथ अंतर्क्रिया के फलस्वरूप होती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति का सीखना अपने आप में विशिष्ट होता है, इसलिए उसके संदर्भजन्य कारकों की पड़ताल करना आवश्यक है। ब्राउन (2000) अधिगम पारिस्थितिकी की विशेषता बताते हैं कि यह एक खुला और जटिल तंत्र होता है, जिसमें व्यक्ति अपनी सक्रियता के फलस्वरूप अनुकूलन एवं बदलाव करता है। बैरन, बी. (2006) का मानना है कि अधिगम पारिस्थितिकी छोटी-छोटी गतिविधि समूहों का समुच्चय होती है, जिसमें भौतिक सामाजिक-सांस्कृतिक कारक विद्यमान होते हैं।

जैक्सन, एन. (2016) का मानना है कि अधिगम पारिस्थितिकी व्यक्तिनिष्ठ होती है। प्रत्येक व्यक्ति

अपने लिए एक अधिगम पारिस्थितिकी का निर्माण करता है। अधिगम पारिस्थितिकी को समझना उन प्रक्रियाओं, अभ्यासों, संबंधों, उपकरणों, महत्वपूर्ण व्यक्तियों एवं सूचना प्रौद्योगिकी के संसाधनों से परिचित होना है, जो अधिगम में योगदान कर रहे हैं। अतः अधिगम पारिस्थितिकी की अवधारणा शिक्षार्थी (सीखने वाले) को केंद्र में रखकर उसके परिवेश में स्थित कारकों के बीच संबंध को उद्घाटित करने का प्रयास करती है।

अध्यापक को ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की अधिगम पारिस्थितिकी को जानना इसलिए आवश्यक है कि जब वे विद्यालय जैसे नए परिवेश में प्रवेश करें तो विद्यालय के भीतर और बाहर के जीवन में अंतर एवं समानता के आधार पर शिक्षणशास्त्रीय निर्णय लिए जा सकें और उनके सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन से जुड़े अनुभवों को अधिगम का स्रोत या संसाधन बनाया जा सके। इस हेतु इस शोध अध्ययन में शोध के गुणात्मक उपागम की वृत्त अध्ययन (केस स्टडी) विधि का प्रयोग किया गया। यह शोध अध्ययन महाराष्ट्र के वर्धा ज़िले के पिपरी मेघे गाँव के नौ विद्यार्थियों के न्यादर्श पर किया गया। इन नौ सहभागी विद्यार्थियों का विवरण तालिका 1 में दिया गया है। इन विद्यार्थियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि निम्न-आय वर्ग की थी। इनमें से अधिकांश विद्यार्थी अनुसूचित जाति से थे। ये सहभागी विद्यार्थी गाँव के निकट स्थित सरकारी विद्यालय में पढ़ते थे। तथ्यों का संकलन एवं अवलोकन साक्षात्कार के माध्यम से किया गया। इस हेतु प्रत्येक सहभागी विद्यार्थी के घर जाकर भी चर्चा की गई।

तालिका 1— शोध के सहभागी विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि का विवरण

नाम ³	कक्षा	परिवार में सदस्य	पिता की व्यावसायिक स्थिति	माता की व्यावसायिक स्थिति
आदित्य	6	माता-पिता, भाई और बहन	कृषि और सुरक्षा गार्ड	कृषि और सफ़ाईकर्मी
साहिल	6	माता-पिता, भाई और दो बहनें	खेतों में मज़दूरी	खेतों में मज़दूरी
समीर	7	दादा-दादी, माता-पिता और पुत्र	किसान	किसान
प्रथम	7	माता-पिता और दो भाई	कृषि और ड्राइवर	कृषि कार्य
पीयूष	6	माता और दो पुत्र	पिता की मृत्यु हो गई है	कृषि और परचून की दुकान
शशि	7	माता-पिता और पुत्र	किसान	खेतों में मज़दूरी
मनोज	8	माता-पिता, भाई और बहन	कृषि	कृषि
ओम	8	दादा, माता-पिता और दो भाई	किसान और गार्ड	गृहिणी
गोविंद	8	दादा, चाचा, माता-पिता, दो भाई और एक बहन	किसान	गृहिणी

तथ्यों का विश्लेषण

शोधार्थी द्वारा शोध के सहभागी विद्यार्थियों के वृत्त अध्ययनों का गुणात्मक विश्लेषण किया गया। विद्यालयेत्तर अधिगम पारिस्थितिकी के प्रमुख पाँच आयामों, जैसे— घरेलू कार्यों में सहयोग, खेती और पशुपालन, व्यावसायिक गतिविधियों में भागीदारी, मित्रों के साथ जुड़ाव तथा जनसंचार के माध्यम, के आधार पर तथ्यों का विश्लेषण निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किया गया है—

घरेलू कार्यों में सहयोग

इस शोध अध्ययन के सहभागी विद्यार्थी अपने परिवारों के घरेलू कार्यों में सक्रिय सहभागिता करते हैं। शोध कार्य के दौरान अवलोकन में पाया गया कि सहभागी बच्चे बरतन साफ़ करने, कपड़े धोने, रसोई का कार्य करने जैसे दैनिक जीवन की गतिविधियों में जुड़े रहते हैं। इन कार्यों का वे स्वतंत्र रूप से निष्पादन करते हैं। उदाहरण के लिए, साहिल बताता है कि ‘कभी-कभी मम्मी जल्दी खेत पर चली जाती है,

तो मैं खाना बनाता हूँ और फिर खेतों पर पहुँचाता हूँ, जैसे— आलू की सब्जी, भिंडी और अंडे की भुजिया, रोटी, चावल आदि।’ बच्चों द्वारा की जाने वाली ये गतिविधियाँ संरचित और असंरचित दोनों तरह की हैं। उनमें श्रम का विभाजन है। कार्य विभाजन में जेंडर का प्रभाव नहीं दिखता है। इस शोध कार्य के सहभागी लड़के भी बरतन धोने व रसोई के कार्य करने जैसे दायित्व निभाते थे। उदाहरण के लिए, पीयूष कहता है कि, ‘मेरे घर में, मेरा और मेरी बहन का बरतन धोने का समय बंटा हुआ है। सुबह वह बरतन धोती है और शाम को मैं धोता हूँ।’ कार्य के इस बँटवारे में अभिभावकों का हस्तक्षेप नहीं है। अभिभावकों ने अनौपचारिक चर्चा में बताया कि सुबह-सुबह ही खेत पर चले जाते हैं, बच्चे खुद ‘समझदारी’ से कार्य करते हैं। यहाँ ‘समझदारी’ का आशय दायित्व स्वीकार करने, प्रभावपूर्ण निष्पादन और संयुक्त भागीदारी का प्रमाण है। बच्चे इन कार्यों के निष्पादन के दौरान केवल कुशलताएँ नहीं सीखते

³यहाँ प्रयुक्त नाम काल्पनिक हैं।

बल्कि उनमें भावनात्मक परिपक्वता भी आती है। उदाहरण के लिए, शशि अपने साक्षात्कार में कहता है, 'घर पर मम्मी-पापा खेतों में काम करके अधिक थक जाते हैं, इसलिए मैं खाना बनाने में मदद करता हूँ। मैं आटा सान (गुथना) देता हूँ। छोटा भाई सब्जी काट देता है और मम्मी सब्जी रोटी बना देती है।' यहाँ उल्लेखनीय है कि शोध के सहभागी विद्यार्थी पढ़ाई के लिए इन कार्यों के अलावा दैनिक चक्र में विद्यालय जाना, दिए गए गृहकार्यों को पूरा करना, मित्रों एवं वयस्कों के साथ विद्यालय के विषयों पर बातचीत करना जैसी गतिविधियाँ भी करते हैं।

दैनिक जीवन के कार्यों में सहयोग देने के साथ सहभागी विद्यार्थी बिजली के उपकरणों को ठीक करने, रंगाई-पुताई करने, कपड़े सिलने जैसे कार्य भी करते हैं। उदाहरण के लिए, प्रथम ने अपना अनुभव साझा करते हुए बताया कि उसके घर में बिजली का बोर्ड खराब हो गया था, तो उसने ही ठीक किया। ऐसे ही पीयूष ने बताया कि वह प्रत्येक वर्ष दीपावली पर घर की रंगाई-पुताई में सहयोग करता है। गोविंद ने बताया कि उसके घर सिलाई मशीन है। वह उस पर तक्रिए और गद्दे के कवर सिल लेता है। गाँव के बच्चों का यह जुड़ाव उनकी दिनचर्या का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह जुड़ाव किसी न किसी उत्पादक कार्य से जुड़ा है। सामान्यतः मध्यमवर्गीय नगरीय परिवारों में इन जुड़ावों के स्थान पर खेल या विद्यालय के कार्य को वयस्क की निगरानी में पूर्ण करने की गतिविधि होती है, जबकि इस शोध कार्य के सहभागी बच्चों के जीवन में खेल और उत्पादक कार्य के बीच कोई विभाजन नहीं दिखाई देता है। इन जुड़ावों को ही मोल एवं अन्य (1992) ने ज्ञानकोश की संज्ञा दी है। इस ज्ञानकोश के माध्यम से बच्चों को गणित, भाषा एवं

विज्ञान पढ़ाया जा सकता है। इन जुड़ावों के दौरान विद्यार्थी वयस्कों की दुनिया के मौन अवलोकनकर्ता होते हैं। वे उनके विचारों को सुनते हैं, जिससे उनका दृष्टिकोण प्रभावित होता है।

खेती और पशुपालन

इस शोध अध्ययन के सहभागी बच्चे किसान परिवारों से संबंधित थे। इस कारण, इन बच्चों की विद्यालयेत्तर गतिविधियों में खेती और पशुपालन सम्मिलित थे। इन गतिविधियों में बच्चों की भागीदारी के दो प्रारूप देखे गए। प्रथम प्रारूप में बच्चे अपने अभिभावकों के साथ उनके सहायक की भूमिका में कृषि का कार्य करते हैं। इसे साहिल और गोविंद के संदर्भ में देखा जा सकता है—

'शाम को घर की सफाई करके खेतों पर जाता हूँ। जहाँ मम्मी-पापा काम कर रहे होते हैं। उनके काम में मदद करता हूँ। यदि वे घास निकाल रहे होते हैं, तो मैं भी निकालता हूँ और यदि वे सब्जी को तोड़ रहे होते हैं, तो मैं भी तोड़ता हूँ। मैं वहाँ पर गोबर की खाद भी डालता हूँ।'

'कभी-कभी सीधे विद्यालय की छुट्टी होने के बाद खेतों पर ही चला जाता हूँ तो वहाँ पर काम करने वाले अन्य मजदूर भी मिलते हैं।'

'मैं खेत में पापा की मदद करता हूँ। जैसे जब पाइप से खेत में पानी दिया जाता है तो मैं पाइप को एक जगह से दूसरी जगह पर रखता हूँ, घास निकालता हूँ और इंजन बंद कर देता हूँ लेकिन मोटर को कभी चालू नहीं करता।... मैं मोटर रिपेयरिंग करने में मदद करता हूँ। मुझे पता है मोटर को खोलने और बंद करने के लिए कौन-सी रिंग लगेगी। यह सब मैं पापा के साथ करता हूँ।'

इस प्रारूप में विद्यार्थियों की कृषि गतिविधियों में प्रशिक्षु की भूमिका होती है। वे वयस्क के मार्गदर्शन में सीखते हैं। उन्हें स्वतंत्र दायित्व नहीं मिलता है। ये कार्य उनकी दिनचर्या का अनिवार्य एवं बाध्यकारी अंग न होकर खेल का स्थानापन्न होते हैं। दूसरे प्रारूप में विद्यार्थी अपने घर के आस-पास बागवानी एवं पशुपालन की गतिविधियाँ करते हैं। इसे प्रथम और शशि के उदाहरण में देखा जा सकता है—

‘मैंने अपने पेड़ लगाए हैं और सब्जियाँ लगाई हैं। घर पर उनकी देखभाल करता हूँ। पानी देता हूँ, खरपतवार निकालता हूँ और खाद डालता हूँ।’

‘विद्यालय से घर पर आने के बाद मैं गाय को अंदर बांधता हूँ। उसके बाद गायों को चारा डालता हूँ। उनके आसपास की सफ़ाई करता हूँ। बाहर जो भी गोबर होता है उसको साफ़ करता हूँ। उसके बाद घर पर जो सब्जियाँ उगाई हैं उनकी देखभाल करता हूँ।’

खेती एवं पशुपालन के कार्यों के संदर्भ में यह भी पाया गया कि ये कार्य बच्चों के दैनिक ज्ञान के सबसे बड़े स्रोत हैं। उदाहरण के लिए, हर सहभागी ने खाद बनाने की प्रक्रिया की चर्चा की। जैविक खाद के महत्व को बताया—

‘मैंने गोबर की खाद अपने तरीके से बनाई है। मैंने गोबर की खाद बनाने के लिए विद्यालय का तरीका नहीं अपनाया। मैंने दो गड्ढे किए। एक गड्ढे में गोबर डाल दिया, दूसरे गड्ढे में गाय का बचा हुआ चारा और ऊपर से खरपतवार डाल दिया। जिस तरफ खरपतवार था, उसमें थोड़ा-थोड़ा गोबर को गीला करके उस पर छिड़काव कर दिया। खरपतवार की खाद केंचुए की खाद बन जाती है। उसमें केंचुए की ज़रूरत नहीं पड़ती है और जिस तरफ सिर्फ़ गोबर होता है, वह गोबर की खाद होती है। इस तरह से हमने

खाद तैयार की और अपने खेतों में उसका उपयोग किया। केंचुए की खाद में केंचुए की ज़रूरत नहीं होती है। जब वह खरपतवार गोबर के संपर्क में आता है, तो वह सड़ने लगता है और उससे कीड़े उत्पन्न होते हैं। वह कीड़े ही उस खाद को तैयार करते हैं।’

ऐसे ही गोविंद ने केले की खेती के बारे में अपने प्रयोग को साझा किया, ‘मैंने केले लगाने का प्रयोग भी किया था जो बहुत सफल रहा। एक केले का पौधा लगाया था। हम तीन भाई-बहनों ने इस एक पेड़ से 32 केले के पेड़ तैयार कर लिए हैं। अब लगभग केले का पूरा बगीचा बन गया है। मेरा लक्ष्य यह है कि मैं सौ से ज्यादा केले के पौधे तैयार करूँ। इसमें मेरे पापा व दादा का कोई योगदान नहीं है। मैं और मेरे भाई-बहन ही इसका ध्यान रखते हैं।’

इन दोनों उदाहरणों से स्पष्ट है कि विद्यार्थी खेती की प्रक्रिया से जुड़ी वैज्ञानिक अवधारणाओं से परिचित हैं। यह वह क्षेत्र है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों के दैनिक ज्ञान एवं वैज्ञानिक ज्ञान के संबंध को मज़बूत किया जा सकता है। क्यूर्मिस (2009) और रिले (2009) का मत इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। इनके अनुसार खेती के कामों में बच्चों की भागीदारी गांव बनाम नगर के ऊंच-नीच को समाप्त करती है। इन कार्यों में भागीदारी के कारण बच्चे कृषि अर्थव्यवस्था के महत्व से भी परिचित होते हैं।

व्यावसायिक गतिविधियों में भागीदारी

इस शोध अध्ययन में पाया गया कि घर के बाहर आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी भी बच्चों की अधिगम पारिस्थितिकी का एक महत्वपूर्ण घटक है। शोध के सहभागी विद्यार्थी अंशकालिक व्यावसायिक गतिविधियों के माध्यम से धनार्जन भी करते हैं—

‘कभी-कभी छुट्टी होने के बाद सेवाग्राम के बाजार में जाता हूँ। यदि एक-दो घंटे का किसी दुकान पर काम मिल गया तो वह भी कर लेता हूँ।’

‘यदि किसी दुकान पर मुझे मज़दूरी मिल गई तो छुट्टी के दिन दुकान पर मज़दूरी कर ली, जैसे— आटे की दुकान पर काम कर दिया, किसी का सामान इधर-उधर करना है या गाड़ी से उतारना-चढ़ाना है तो वह कर देता हूँ।’

‘कभी-कभी मौका लगा तो मोटर-गाड़ी ठीक करने की दुकान पर भी कार्य करता हूँ। इससे कुछ पैसे मिल जाते हैं। जब लंबी छुट्टियाँ होती हैं तो ही इस काम पर जाता हूँ।’

विद्यार्थियों के इन कार्यों को विद्यालयी शिक्षा के साथ किए जाने वाले उत्पादक श्रम के रूप में देखा जाना चाहिए। ये भारतीय ग्रामीण परिवेश में बच्चों के ज़िम्मेदार वयस्क की ओर बढ़ने के प्रमाण हैं। बच्चों के विद्यालयी जीवन और इन अंशकालिक कार्यों के बीच कोई टकराव नहीं है। इस शोध कार्य के सहभागी विद्यार्थी स्वयं भी सुनिश्चित कर रहे हैं कि आर्थिक उद्देश्यों के लिए की जाने वाली ये गतिविधियाँ ‘अंशकालिक’ ही रहें। वसंता (2004) का मानना है कि इस तरह के कार्यों में भागीदारी वंचित एवं गरीब परिवार के बच्चों के उस आत्मबोध का हिस्सा है, जिसके अनुसार उत्पादक कार्य उनके दैनिक जीवन का हिस्सा है।

मित्रों के साथ जुड़ाव

इस शोध अध्ययन के सहभागी विद्यार्थियों के लिए मित्रमंडली एक महत्वपूर्ण समूह है जिसके साथ वे प्रायः छुट्टी का दिन बिताते हैं। इस शोध कार्य के सहभागी विद्यार्थी मित्रों के साथ नियमित खेलने जैसी

किसी गतिविधि का उल्लेख नहीं करते हैं। लेकिन वे बताते हैं कि जब समय मिलता है तो दोस्तों के साथ खेलते हैं। वे प्रायः विद्यालय की छुट्टी के बाद विद्यालय में ही खेलते हैं। अवकाश के दिनों में भी विद्यालय के मैदान को खेल के लिए चुनते हैं। इन बच्चों के लिए मित्रों के साथ भोजन करना एक प्रमुख गतिविधि है। इसे सभी सहभागी विद्यार्थियों ने साझा किया। इससे जुड़े कुछ उदाहरण यहाँ दिए जा रहे हैं—

‘उसके बाद हम दोस्तों के साथ डब्बा पार्टी करते हैं। हम सब टिफिन लेकर नदी के किनारे जाते हैं, वहीं पार्टी करते हैं। नदी में तैरते हैं। जिन्हें तैरना नहीं आता वे रस्सी को पेड़ से बांध देते हैं और उसे पकड़कर पानी में कूदते हैं।’

‘कभी-कभी घर से पैसे लेकर बाज़ार जाता हूँ। मंचूरियन और चाऊमीन लाता हूँ। इसका मतलब यह नहीं है कि मैं बना-बनाया बाज़ार से लाता हूँ बल्कि इन सब चीज़ों को बनाने के लिए सामग्री बाज़ार से लाता हूँ और घर पर बनाता हूँ। मुझे चाऊमीन बनाना नहीं आता लेकिन मेरे दोस्तों को आता है। वे मेरे घर आकर बनाते हैं।’

‘हमने एक ट्री-हाउस बनाया है। हमने पेड़ पर मड़ैया रखी हुई है। इसके अंदर हम लोगों ने अंडा बिरयानी पार्टी की थी।’

‘हमने एक बार अपने दोस्त का बर्थ-डे मनाया था। हम सभी लोगों ने 10-10 रूपए इकट्ठे किए थे। एक केक मंगवाया था और फिर पार्टी की थी। इसमें हम दस लड़के शामिल थे।’

इन सभी उदाहरणों के आधार पर कह सकते हैं कि इन बच्चों के लिए आराम का समय एवं मनोरंजन एक भिन्न अर्थ रखता है। किशोरावस्था की ओर बढ़ रहे

इन बच्चों में 'पार्टी-संस्कृति' के प्रति लगाव है, लेकिन उसे वे अपनी सामुदायिक संस्कृति के अनुरूप मनाते हैं। इस आयोजन में यद्यपि बाज़ार की उपस्थिति है, लेकिन सर्वाधिक झुकाव, मिल-जुलकर भोजन बनाने और आनंद लेने की ओर है। मित्रों के साथ जुड़ाव के संदर्भ में उल्लेखनीय है कि समान आयु समूह के बच्चों की ही मित्रता दिखती है। इन समूहों में अंतर्क्रिया के दौरान अकादमिक, समसामयिक घटनाओं, प्रयोगों, मीडिया के उदाहरणों पर चर्चा होती है।

जनसंचार के माध्यम

शोध अध्ययन के दौरान अवलोकन में पाया गया कि इन सहभागी विद्यार्थियों के पास पाठ्यपुस्तकों के अलावा किसी भी तरह की अन्य मुद्रित सामग्री नहीं थी। शोध के सहभागी किसी भी बच्चे के घर अखबार नहीं आता था। सभी के घर में टेलीविज़न है। वे बताते हैं कि टेलीविज़न पर फ़िल्म और कार्टून देखते हैं। कभी-कभी अभिभावकों के साथ समाचार भी सुन लेते हैं। सभी के घरों में मोबाइल फ़ोन था, लेकिन ये फ़ोन 'मल्टीमीडिया' वाले नहीं थे। यदि थे भी तो उनमें उच्च तकनीकी विशेषताओं का अभाव था। जनसंचार माध्यमों के इस सीमित परिवेश में टेलीविज़न ही सर्वप्रमुख साधन था। उदाहरण के लिए—

‘टी.वी. पर अनएकेडमी का प्रचार आता है। इसे देखकर मुझे पता चला कि उससे भी पढ़ सकते हैं लेकिन मैंने उसका सब्सक्रिप्शन नहीं लिया है क्योंकि इसके पैसे लगते हैं।’

‘बहुत सारे एप होते हैं जिनकी मदद से बच्चे पढ़ते हैं। कभी-कभी मैं भी ज़रूरत पड़ने पर यू-ट्यूब से पढ़ लेता हूँ।’

ये दोनों ही उदाहरण 'डिजिटल डिवाइड' के प्रमाण हैं, जो बताते हैं कि गाँव के गरीब किसान परिवारों के दैनिक जीवन में जनसंचार माध्यमों की उपस्थिति न्यूनतम है। इसे बच्चे भी पहचान रहे हैं। उन्हें इन नए स्रोतों के बारे में पता है, उनमें इन स्रोतों तक न पहुँच पाने की चिंता भी है। इनके लिए जनसंचार औपचारिक अधिगम का ई-माध्यम नहीं बन रहा है, वह केवल मनोरंजन का साधन है, जो अनौपचारिक अधिगम का साधन है। प्रिंट मीडिया का अभाव, साक्षरता के विद्यालयेत्तर साधन के अभाव को दर्शाता है। इसका प्रभाव भाषा की कुशलताओं के विकास पर पड़ता है।

परिणाम एवं निष्कर्ष

पोवेल, टेलर और स्मिथ (2013) ने ग्रामीण बच्चों से संबंधित अध्ययनों की समीक्षा के आधार पर पाया कि अधिकांश अध्ययनों में ग्रामीण विद्यार्थियों को आलसी और संज्ञानात्मक रूप से पिछड़ा हुआ माना गया है। उनमें आधुनिक तकनीकियों, जैसे— सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग की कुशलता के अभाव को चिह्नित किया गया है। जबकि ग्रामीण अधिगम पारिस्थितिकी को प्राकृतिक घटकों— खेत, जलाशय, बाग आदि के संदर्भ में देखा गया है। वस्तुतः ऐसे अध्ययन समकालीन संदर्भों में बदलते और जटिल होते ग्रामीण परिवेश को संज्ञान में लेने के बजाय आदिम ग्रामीण समाज की मान्यता पर आधारित हैं। यदि ग्रामीण परिवेश को नगरीकरण, प्रौद्योगिकी और बाज़ार में हो रहे परिवर्तनों के सापेक्ष देखा जाएगा तो एक भिन्न चित्र उपस्थित होगा। यह शोध अध्ययन इसी का एक उदाहरण है। इस शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि ग्रामीण बच्चों

की अधिगम पारिस्थितिकी विविधतापूर्ण है। इस शोध के सहभागी बच्चे अपने परिवार के उत्पादक सदस्य हैं। वे माता-पिता, दादा-दादी, भाई-बहनों के साथ मिलकर कार्य करते हैं। घरेलू कार्यों में स्वतंत्र निष्पादन का दायित्व हो, परिवार के अन्य सदस्यों के साथ कार्यों में भागीदारी, खेलों में कार्य करना, दोस्तों के साथ कार्य एवं खेल, व्यावसायिक गतिविधियों में भागीदारी और जनसंचार माध्यमों के साथ जुड़ना उनकी अधिगम पारिस्थितिकी का हिस्सा है।

इन गतिविधियों के दौरान बच्चे केवल कौशलों का अभ्यास ही नहीं करते, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ में घट रही घटनाओं व प्रक्रियाओं का अर्थ भी निर्मित करते हैं, जिससे उनकी चिंतन प्रक्रिया या कहें कि विश्वदृष्टि के विकास पर प्रभाव पड़ता है। यह शोध अध्ययन बताता है कि ग्रामीण परिवेश में वयस्क और बच्चों के संबंध में नियंता-अधीनस्थ का एकमात्र मॉडल नहीं है। उनमें जिम्मेदारियों को साझा करने का भाव है। देखकर सीखना, करके सीखना, मार्गदर्शन में सीखना, सहायक के रूप में सीखना, बच्चे को स्वतंत्र निष्पादन में मदद करना जैसे तरीकों के माध्यम से बच्चे दैनिक जीवन की गतिविधियों से सीख रहे हैं। नगर में रहने वाले वंचित परिवारों के बच्चों के संदर्भ में मिश्रा (2017) के शोध अध्ययन में भी यही परिणाम प्राप्त हुए थे। इसके अलावा, शर्मा (2007) के मानवशास्त्रीय अध्ययन में भी बच्चों की विद्यालयेत्तर दुनिया में भौतिक संसाधनों के साथ गहन अंतर्क्रिया का प्रमाण मिलता है।

इन दोनों शोध अध्ययनों के समान ही इस शोध अध्ययन में भी पाया गया कि विद्यालय के बाहर की

गतिविधियों में बच्चों के पास स्वायत्तता होती है। वे प्रश्न का सही जवाब देने के उद्देश्य से बातचीत नहीं कर रहे हैं, बल्कि किसी कार्य को करने के दौरान आने वाली वास्तविक समस्याओं के समाधान के लिए प्रश्न पूछ रहे हैं। इस कार्य में पाया गया कि विद्यालय के बाद के समय का बड़ा हिस्सा वे अनौपचारिक, असंरचित और वयस्कों के नियंत्रण से मुक्त वातावरण में बिताते हैं। गाँव के बच्चों की अधिगम पारिस्थितिकी उनके संज्ञान के साथ-साथ भावनात्मक पक्ष को भी मजबूत करती है। उनके कार्य निष्पादन में उद्देश्य निहित होने का भाव होता है। वे अपने परिवार की परिस्थितियों को समझते हैं और उसके समाधान में योगदान करने के लिए अभिप्रेरित रहते हैं। वे केवल कौशल की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि वास्तविक समस्या के समाधान के नए तरीके खोजते हैं। यह भी पाया गया कि बच्चे और वयस्क द्वारा कुछ कार्य एक जैसे किए जाते हैं। उनके कार्य करने का लक्ष्य भी समान होता है। वे किसी बाह्य दंड या पुरस्कार की इच्छा से कार्य नहीं करते हैं, बल्कि परिवार के कार्यों में स्वाभाविक भागीदारी करने और स्वतः अभिप्रेरित होकर योगदान करने की इच्छा से कार्य करते हैं।

निष्कर्षतः ग्रामीण अधिगम परिवेश में अलग-अलग गतिविधि क्षेत्रों के बीच संबंधों का एक जटिल जाल है, जिसमें स्थापित कर्ता अर्थ निर्मित करता है। इस प्रक्रिया के मुख्य चालक सीखने वाले की जिज्ञासा, उत्सुकता और साझेदारी की भावना है। सीखने की प्रक्रिया में परिवेश के साथ अनुकूलन, सामंजस्य एवं संतुलन विद्यमान है, जैसे— खेती और पढ़ाई, मनोरंजन और उत्पादक कार्य के बीच

ज्ञान का स्थानांतरण, विद्यालय में सीखी गणितीय विधि का घर में उपयोग, कृषि के अनुभव का कक्षा के विज्ञान विषय में सीखने में उपयोग, वास्तविक समस्याओं के समाधान के लिए युक्तियों का प्रयोग आदि इसके उदाहरण हैं। इसके साथ ही, वे विद्यालय के बाहर की गतिविधियों में विश्वास, मूल्यों, रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों का सामना करते हैं। कई बार इनका पुनरूत्पादन होता है, तो कई बार उसे वे प्रश्नांकित कर रहे हैं। हमें ध्यान रखने की आवश्यकता है कि खेती के कामों से लेकर अंशकालिक व्यावसायिक गतिविधियों में भागीदारी, परिवार के घरेलू कार्यों से लेकर छोटी-मोटी कुशलताओं, जैसे— मशीन ठीक करना, कपड़े सिलना, पानी की व्यवस्था करना आदि से अर्जित अनुभवों को विद्यालयी विषयों के साथ एकीकृत किया जा सकता है। इन्हें गणित, विज्ञान, भाषा आदि की अवधारणाओं से जोड़ा जा सकता है।

शैक्षिक उपयोगिता

इस शोध अध्ययन के निष्कर्षों को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के आलोक में देखें तो कुछ महत्वपूर्ण निहितार्थ उभरकर सामने आते हैं। इस नीति में यह संस्तुति दी गई है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों को स्थानीय कला और शिल्प की शिक्षा दी जाए। इसके लिए स्थानीय समुदाय से विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाए। इस शोध अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट है कि ग्रामीण परिवेश में कला एवं शिल्प की विधाओं का चयन कोई कठिन कार्य नहीं है। ये विधाएँ विद्यार्थियों के परिवेश और दैनिक जीवन में

उपस्थित होती हैं। जब औपचारिक शिक्षा में स्थानीय शिल्प और कला का समावेश होगा तो विद्यालय और समुदाय के बीच घनिष्ठता बढ़ेगी। विद्यालय के अभिभावकों में से ही हम कुछ अभिभावकों को विशेषज्ञों के रूप में चयनित कर सकते हैं। इस प्रकार, वे विद्यालय की शैक्षिक गतिविधियों से जुड़ेंगे। विद्यार्थियों और उनके परिवारों में सकारात्मकता का संचार भी होगा। आगे चलकर इन्हीं अभिभावकों में से कुछ को विद्यालय स्तर पर बच्चों के शिक्षण का विशेष प्रशिक्षण दिया जा सकता है, जिससे हमें विद्यालय संकुल में शिक्षण के लिए प्रशिक्षित विशेषज्ञ सहजता से उपलब्ध हो सकेंगे। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षा 2020*, कृषि शिक्षा पर विशेष बल देती है। इस शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा नीति के सुझाव का समर्थन करते हैं। हम विद्यालय स्तर पर विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञानों के साथ कृषि का एकीकरण करें तो विद्यार्थियों में कृषि अर्थव्यवस्था के लिए वैज्ञानिक एवं आलोचनात्मक दृष्टि का विकास होगा। यदि कोई अध्यापक, बच्चों के जीवन और अनुभवों से परिचित हो और उसके आधार पर उनके लिए शिक्षण गतिविधियों का आयोजन करे, तो सीखने की प्रक्रिया में स्वाभाविकता के साथ-साथ संदर्भानुकूलता भी आएगी। यदि ग्रामीण परिवेश के बच्चों के समृद्ध अनुभवों को उनके कक्षा शिक्षण या विद्यालयी शिक्षा से जोड़ा जाए, तो उनमें वैज्ञानिक ज्ञान का निर्माण और सामाजिक सच्चाइयों के बारे में आलोचनात्मक चिंतन विकसित किया जा सकता है।

संदर्भ

- कोपेंस, ए., एल्केला, एल., रोगोफ, बी. और आर. मेजारूज. 2016. चिल्ड्रेंस कन्ट्रीब्यूशन इन फैमिली वर्क— टू कल्चरल पैराडाइम. संपादन में बूक समांथा. पंच और राबर्ट वांडरबेक (संपादक). *फ़ैमिलीज, इंटरजेनरेशनलिटी एंड पीयर ग्रुप रिलेशंस*. पृष्ठ संख्या 1–27. स्प्रिंगर, सिंगापुर.
- क्यूमिंस, एच. 2009. रूरल चिल्ड्रेंस पर्सेप्शन ऑफ़ लाइफ़ ऑन द लैंड इन साउथवेस्टर्न ओंटारियो. *द कनाडियन ज्योग्राफ़र*. 53(1), पृष्ठ संख्या 63–83.
- ग्रीनफील्ड, पी. और जे., लावे. 1982. कॉनेटिव आस्पेक्ट्स ऑफ़ इनफ़ॉर्मल एजुकेशन. डी. ए. वेंजर और एच. डब्ल्यू स्टीवेंसन (संपादक). *कल्चरल पर्सेप्टिव ऑन चाइल्ड डेवलपमेंट*. पृष्ठ संख्या 181–207. फ्रीमैन, सैन फ्रांसिस्को.
- जैक्सन, एन. 2016. *एक्सप्लोरिंग लर्निंग इकोलोजीज*. चाक माउंटेन, लंदन.
- पोवेल, एम. ए., टेलर, एन. और ए. बी. स्मिथ. 2013. कंस्ट्रक्शन ऑफ़ रूरल चाइल्डहुड— चैलेंजिंग डोमिनेंट पर्सेप्टिव. *चिल्ड्रेंस ज्योग्राफीज*. 11(1), पृष्ठ संख्या 117–131.
- बालगोपालन, एस. 2008. मेमोरिज ऑफ़ टूमारो— चिल्ड्रन, लेबर एंड द पैसिया ऑफ़ फ़ॉर्मल स्कूलिंग. *जर्नल ऑफ़ द हिस्ट्री ऑफ़ चाइल्डहुड एंड यूथ*. 1(2), पृष्ठ संख्या 267–285.
- बैरन, बी. 2006. इंटेरेस्ट एंड सेल्फ़ सस्टेंड लर्निंग एज कैंटलिस्ट ऑफ़ डेवलपमेंट— ए लर्निंग इकोलोजी पर्सेप्टिव. *ह्यूमन डेवलपमेंट*. 49(4), पृष्ठ संख्या 193–224.
- ब्राउन, जे. 2000. ग्राइंग अप डिजिटल— हाउ द वेब चेंजेज वर्क एंड एडुकेशन एंड द वेज पीपल लर्न. *चेंज*. पृष्ठ संख्या 11–20.
- मिश्रा, ऋषभ कुमार. 2017. *बच्चों की सामाजिक विज्ञान की समझ— उनके विद्यालयी ज्ञान और दैनंदिन ज्ञान की पारस्परिकता का अध्ययन*. अप्रकाशित शोध प्रबंध, दिल्ली विश्वविद्यालय.
- मोल, एल., अमान्ती, सी. नेफ, डी. और एन. गोजलेज. 1992. फंड्स ऑफ़ नॉलेज फ़ॉर टीचिंग— यूजिंग ए क्वालिटेटिव अप्रोच टू कनेक्ट होम्स एंड क्लासरूमस. *क्वालिटेटिव इश्यूज इन एजुकेशन रिसर्च*. 31 (2), पृष्ठ संख्या 132–141.
- रिले, एम. 2009. द नेक्स्ट लिंक इन द चेन— चिल्ड्रन, एग्री-बिजनेस एंड द फैमिली फ़ार्म. *चिल्ड्रेंस ज्योग्राफीज*. 7(3), पृष्ठ संख्या 245–260.
- रोगोफ, बी. 1993. *द कल्चरल नेचर ऑफ़ ह्यूमन डेवलपमेंट*. न्यूयॉर्क, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- लेव, जे. और ई. वेंजर. 1991. *सिचुएटेड लर्निंग— लेजीटिमेट पेरीफ़ेरल पार्टीशिपेशन*. केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस केम्ब्रिज.
- वसंता, डी. 2004. चाइल्डहुड, वर्क एंड स्कूलिंग— सम रिफ्लेक्शंस. *कंटेम्पेरी एजुकेशन डायलॉग*. 2(1), पृष्ठ संख्या 5–29.
- शर्मा, ए. 2007. मेकिंग (इलेक्ट्रिकल) कनेक्शन— एक्सप्लोरिंग स्टूडेंट्स एजेंसी इन ए स्कूल इन इंडिया. *साइंस एजुकेशन*. 92 (2), पृष्ठ संख्या 297–319.
- स्क्रिबनर, एस. और एम., कोल. 1973. द कॉनेटिव कंसिक्वेन्सेज ऑफ़ फ़ॉर्मल एंड इनफ़ॉर्मल एजुकेशन. *साइंस*. 182, पृष्ठ संख्या 553–559.